# दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
# गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in


दिनांक 08.10.2025

प्रकाशनार्थ

**दिनांक 08.10.2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर द्वारा आयोजित एवं भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित भारत अमेरिका सम्बन्ध : समकालीन परिप्रेक्ष्य विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय–संगोष्ठी** के दूसरे दिन समापन सत्र में बतौर **मुख्य अतिथि प्रो. अश्विनी के.महापात्रा, पूर्व अधिष्ठाता, स्कूल ऑफ इण्टरनेशनल स्टडीज, (एस.आइ.एस.), जे.एन.यू.नई दिल्ली** ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि भारत–अमेरिका संबंध आज मात्र कूटनीतिक औपचारिकताओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वैश्विक लोकतांत्रिक मूल्यों, समावेशी विकास और प्रौद्योगिकीय नवाचार के सशक्त आधार पर विकसित हो रहे हैं। **प्रो.महापात्रा** ने इसे "21वीं सदी की वैश्विक साझेदारी" कहते हुए स्पष्ट किया कि दोनों देश समान विचारधारा वाले लोकतंत्रों के रूप में विश्व में स्थिरता और शांति के नए प्रतिमान प्रस्तुत कर रहे हैं। सुरक्षा, शिक्षा, ऊर्जा, रक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान और जलवायु परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में सतत सहयोग इस संबंध को एक बहुआयामी रणनीतिक गठबंधन का रूप दे रहा है। उन्होंने आगे कहा कि यह संबंध केवल सामरिक या आर्थिक नहीं, बल्कि मानवीय और बौद्धिक संवाद पर आधारित है। भारत और अमेरिका के बीच बनी यह पारदर्शी समझ एक ऐसे विश्वास पर टिकी है, जिसे कोई अन्य शक्ति, विशेषकर चीन, प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। ज्ञान का केंद्रीकरण नहीं होना चाहिए, क्योंकि वही प्रभुत्व का माध्यम बनता है। भारत को अमेरिका की गाथा का अनुकरण करने के बजाय अपनी आत्मनिर्भर नीति को आगे रखना चाहिए। आत्मनिर्भरता के लिए सरकार पर पूर्ण रूप से निर्भर नही होना चाहिए। इसी भाव से प्रेरित होकर महापात्रा ने युवाओं से आह्वान किया कि वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति की गहराई को समझें और राष्ट्रहित में सक्रिय भूमिका निभाएं।

**विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर राघवेंद्र प्रताप सिंह, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ** ने कहा कि भारतीय–अमेरिकी संबंधों के समकालीन परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय सुरक्षा की संकल्पना अब केवल सैन्य शक्तियों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह आर्थिक, तकनीकी और कूटनीतिक सहयोग तक विस्तृत हो गई है। आज प्रत्येक राष्ट्र अपने आर्थिक हितों को सर्वोपरि रख रहा है, और भारत एक तीव्र गति से उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में वैश्विक मंच पर प्रभाव बढ़ा रहा है। चीन के विस्तारवाद को संतुलित करना और वैश्विक व्यापार में नई संभावनाओं को साधना भारत–अमेरिका सहयोग की प्रमुख दिशा बन गई है। भारत की नीति सदैव समाजहित और वैश्विक संतुलन पर आधारित रही है, इसीलिए उसकी विदेश नीति स्वतंत्र, व्यावहारिक और बहुध्रुवीय व्यवस्था के अनुकूल है। भारत आर्थिक विकास और सामरिक साझेदारी के माध्यम से न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर रहा है, बल्कि एक समानतापूर्ण विश्व व्यवस्था के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। वर्तमान युग में जब कोई भी देश पूर्णतः सुरक्षित नहीं है और प्रत्येक राष्ट्र बाजार व संसाधनों की खोज में है, तब भारत का दृष्टिकोण विवादों से परे रहकर वैश्विक सहयोग, व्यापार और शांति की दिशा में अग्रसर होने का प्रतीक है।

**समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रो. ओम प्रकाश सिंह** ने कहा कि विश्व गुरू भारत को समय और नीति के निर्धारण में बौद्धिक अभिजन ही प्रमुख भूमिका निभाते है परन्तु अब जन संवाद निर्णय में मुख्य भूमिका निभाने लगा है। इस दिशा में सोशल मीडिया की प्रमुख भूमिका भी सामने आयी है। ज्ञान कुछ लोगों के हाथ में केन्द्रीत नही होनी चहिए बल्कि इसका प्रकीर्णन होना चाहिए।

**राष्ट्रीय संगोष्ठी के तृतीय एवं चतुर्थ तकनीकी सत्रों** की **अध्यक्षता प्रो. गोपाल प्रसाद,** आचार्य दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, **मुख्य अतिथि** के रूप में डा0 अविनाश प्रताप सिंह, सहायक आचार्य, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु व **विशिष्ट अतिथि** डॉ0 राजीव कुमार सिंह, सहायक आचार्य, ए0पी0एन0 पी0जी0 कालेज, बस्ती थे। तकनीकी सत्रों में **कुल 27 ऑफलाइन एवं 11 ऑनलाइन शोध–पत्रों का वाचन** किया गया।

**राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह का संचालन डॉ. समृद्धि सिह** एवं आभार ज्ञापन **डॉ. इन्द्रेश कुमार,** अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग ने कया। उक्त अवसर पर डॉ. यंशवत राव, डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. कौशल प्रताप सिंह, डॉ. प्रवीन कुमार सिंह, प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, प्रो. परीक्षित सिंह, प्रो. अर्चना सिंह, प्रो. शुभ्रा श्रीवास्तव, प्रो. अरूण तिवारी महाविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्वतजन उपस्थित रहे।

**डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)**
**प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क**